विश्व पर्यावरण दिवस

पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र में पर्यावरण पर्व का आयोजन

कला, साहित्य, सिनेमा में पर्यावरण के स्वर पर व्याख्यान

...

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा आयोजित पर्यावरण पर्व के अन्तर्गत "Inspired by Nature, For Climate, For Our Future" विषय पर कार्यशाला और ग्रीन फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित वक्ताओं का स्वागत करते हुए पर्यावरण पर्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का विस्तृत परिचय केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यशाला की रूप रेखा पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. कुमार बीरेन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वत और जीव–जन्तुओं के माध्यम से किया गया है। कवियों और लेखकों ने पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देते हुए मानव और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को दर्शाया है। यह पर्यावरणीय सन्तुलन, सौन्दर्य और संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. पंकज श्रीवास्तव ने पर्यावरण संरक्षण में वानिकी की भूमिका से अवगत कराया, साथ ही वानिकी को बढ़ावा देने की बात कही। इसी क्रम में उन्होने कहा कि वृक्ष वायु में कार्बन डाई ऑक्साइड को अवशोषित करके जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। वरिष्ठ रंगकर्मी, प्रवीण शेखर ने कहा कि भारतीय और पश्चिमी नाटक, प्रकृति एवं पर्यावरण जैसे विषयों पर केन्द्रित रहे हैं। नाटककार और साहित्यकार हमेशा इस विषय के प्रति सजग रहे हैं। उन्होने पश्चिमी और भारतीय कलाकृतियों की भी चर्चा किया, जिसमें पर्यावरण को चित्रित किया गया है। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने भारतीय और पश्चिमी सिनेमा के माध्यम से पर्यावरण को संरक्षित करने सम्बन्धित फिल्मों का विश्लेषण किया। कार्यशाला का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

उक्त आयोजित कार्यशाला में विद्यार्थियों, शिक्षकों, सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। उपस्थित प्रतिभागियों ने पर्यावरण संरक्षण एवं अधिकाधिक वृक्षारोपण का संकल्प लिया। कार्यशाला के अन्त में सभी प्रतिभागियों का आभार वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव द्वारा व्यक्त किया गया तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए निरन्तर प्रयास करने का आह्वान किया गया।

केन्द्र द्वारा 34 वर्षों में किए गए अनुसंधान कार्यों पर आधारित डॉ. संजय सिंह तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा लिखित ***Sustainable Solutions, Enduring Impact-A Research Retrospective of ICFRE-ERC*** *पुस्तिका का विमोचन किया गया।*

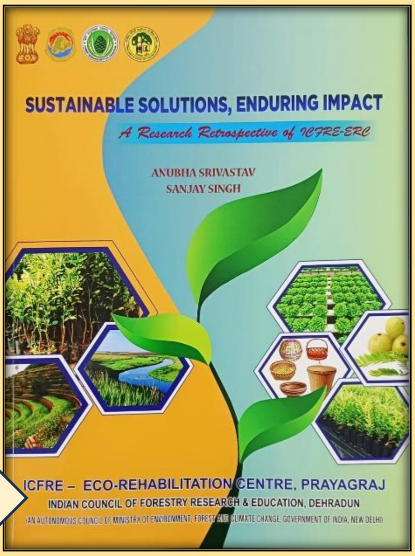

JURY MEMBERS

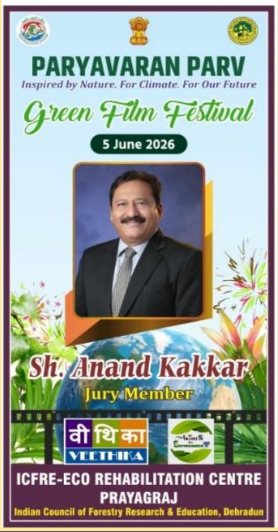

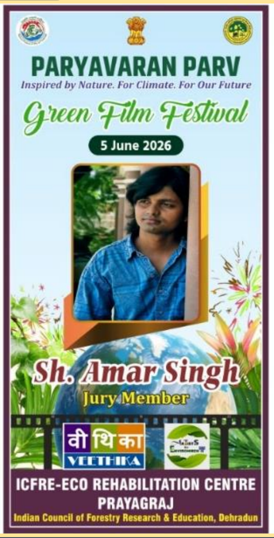

प्रथम ग्रीन फिल्म फेस्टिवल

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दूसरे तकनीकी सत्र में ग्रीन फिल्म फेस्टिवल के अन्तर्गत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें नगर के सम्मानित संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में फिल्म समीक्षक–आनन्द कक्कड़, चिकित्सक व पर्यावरणविद–डॉ. कंचन मिश्रा तथा अभिनेता– अमर सिंह आदि सम्मिलित रहे। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न वानिकी संस्थानों द्वारा प्राप्त पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित लघु फिल्म्स का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में उच्च गुणवत्ता तथा प्रदर्शन हेतु सम्मानित जूरी मेम्बर्स द्वारा प्रविष्टियों को पुरस्कार हेतु चयनित किया गया। फिल्म फेस्टिवल में चयनित कुल 7 लघु फिल्मों में से ग्रीन लेंस अवार्ड हेतु चयनित 5 लघु फिल्में क्रमशः 'द हैबिटेट ट्रीज', 'ट्री हेल्थ मॉनिटरिंग', 'पवित्र उपवन', 'पारिस्थितिक पुनर्स्थापन की गाथा', 'अगर, चंदन और बाँस की खेती', के साथ ही ऑनरेबल मेंसन हेतु चयनित 2 लघु फिल्में क्रमशः 'प्लांट..प्रॉफिट..प्रॉस्पर..' व 'पश्चिमी राजस्थान में रेतीले धोरे का स्थरीकरण' थीं।

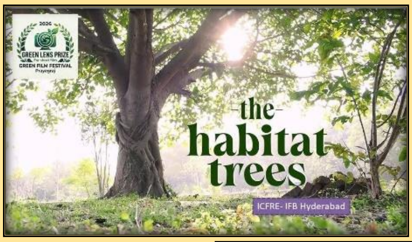

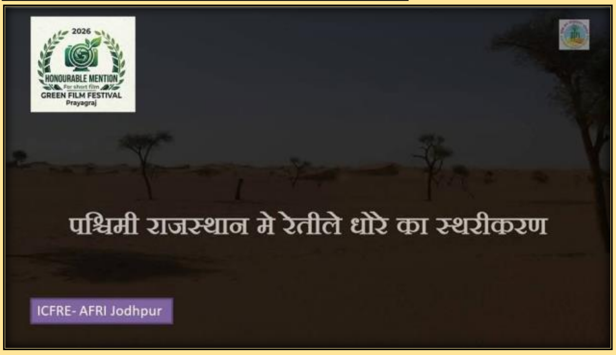

PARYAVARAN PARV
WORKSHOP
ON
ENVIRONMENTAL VOICES IN ART,
LITERATURE AND CINEMA
5 June, 2026 | 10:00 AM
ICFRE-ECO REHABILITATION CENTRE, PRAYAGRAJ
Indian Council of Forestry Research & Education, Dehradun

Green Film Festival
In Association With
वीथिका
VEETHIKA
PARYAVARAN PARV
Inspired by Nature. For Climate. For Our Future
WORLD ENVIRONMENT DAY 2026
05 June 2026
ICFRE-ECO REHABILITATION CENTRE, PRAYAGRAJ
Indian Council of Forestry Research & Education, Dehradun

ICFRE-ERC PRAYAGRAJ
ENVIRONMENTAL VOICES IN
KUMAR BIRENDRA
SANJAY SINGH

PARYAVARAN PARV
WORKSHOP
ON
ENVIRONMENTAL VOICES IN ART
LITERATURE AND CINEMA
5 June, 2026 | 10:00 AM
ICFRE-ECO REHABILITATION CENTRE, PRAYAG
Indian Council of Forestry Research & Education, Dehradu

DELL

ICFRE- ERC PRAYAGRAJ
Green Film Festival
In Association with
PARYAVARAN PARV
Inspired by Nature.
For Climate.
For Our Future
WORLD ENVIRONMENT DAY 2026
5 June 2026
ICFRE-ECO REHABILITATION CENTRE PRAYAGRAJ
Indian Council of Forestry Research & Education, Dehradun
AMAR SINGH
KANCHAN MISHRA
ANAND KAKKAD
SANJAY SINGH

PARYAVARAN PARV
WORLD ENVIRONMENT DAY 2026
5 June 2026
ICFRE- ECO REHABILITATION CENTRE
PRAYAGRAJ

ANAND KAKKAD
KANCHAN MISHRA

ICFRE-ERC PRAYAGRAJ
PARYAVARAN PARV
WORKSHOP
ON
ENVIRONMENTAL VOICES IN ART,
LITERATURE AND CINEMA
5 June, 2026 | 10:00 AM
CENTRE, PRAYAGRAJ
Council of Forestry Research & Education, Dehradun

ICFRE - ERC PRAYAGRAJ
PARYAVARAN PARV
PRAVEEN SHEKHAR
KUMAR BIRENDRA
SANJAY SINGH
PANKAJ SRIVASTAVA

PARYAVARAN PARV
WORKSHOP
ON
ENVIRONMENTAL VOICES IN ART,

हिन्दुस्थान समाचार
Hindusthan Samachar

Saturday, 6 June, 2026

पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र में प्रथम ग्रीन फिल्म फेस्टिवल

05 Jun 2026 18:10:53

-कला, साहित्य, सिनेमा में पर्यावरण के स्वर पर व्याख्यानप्रयागराज, 05 जून (हि.स)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा 'पर्यावरण पर्व कार्यशाला और ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल' का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित वक्ताओं का स्वागत करते हुए पर्यावरण पर्व पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा 34 वर्षों में किए गए कार्यों पर आधारित डॉ. संजय सिंह तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा लिखित 'Sustainable Solutions, Enduring Impact-A Research Retrospective of ICFRE-ERC' पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. कुमार बीरेंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वत और जीवन जंतुओं के माध्यम से किया गया है। कवियों और लेखकों ने पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देते हुए मानव और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को दर्शाया है। यह साहित्य पर्यावरणीय संतुलन, सौंदर्य और संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. पंकज श्रीवास्तव ने वीडियो प्रेजेंटेशन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में वानिकी की भूमिका से अवगत कराया, साथ ही वानिकी को बढ़ावा देने की बात कही। उन्होंने कहा कि वानिकी कार्यक्रम वायु में कार्बन डाई ऑक्साइड को अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। वरिष्ठ रंगकर्मी, प्रवीण शेखर ने कहा कि भारतीय और पश्चिमी नाटक के सन्दर्भ से बताया कि किस प्रकार पर्यावरण का विषय और चिंता अनेक भारतीय नाटकों का केन्द्रीय विषय रहा है। नाटककार और साहित्यकार हमेशा इस चिंता के प्रति सजग रहे हैं। उन्होंने पश्चिमी और भारतीय कलाकृतियों की भी चर्चा की, जिसमें पर्यावरण को चित्रवृत्त किया गया है।

केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने वीडियो प्रेजेंटेशन के माध्यम से भारतीय और पश्चिमी सिनेमा पर्यावरण को केन्द्र में रखकर फिल्मों का विशेषण किया। जिन्होंने फ़िल्म इतिहास की पश्चिमी, एशियाई देशों की कई कथा फिल्मों और वृत्तचित्रों की चर्चा की, इसमें पर्यावरण केन्द्रीय सवाल रहा। कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यशाला की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने किया।

कार्यशाला के दूसरे तकनीकी सत्र में ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया, जिसमें नगर के सम्मानित संस्थानों के दर्शक आदि उपस्थित रहे। फेस्टिवल की जूरी में फ़िल्म समीक्षक आनंद कक्कड़, चिकित्सक व पर्यावरणविद डॉ. कंचन मिश्रा तथा अभिनेता अमर सिंह आदि रहे। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न वानिकी संस्थानों द्वारा प्राप्त पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित ग्रीन फ़िल्म क्लिप्स का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में उच्च गुणवत्ता तथा प्रदर्शन हेतु सम्मानित जूरी मेम्बर्स द्वारा प्रविष्टियों को पुरस्कार हेतु चयनित किया गया।

आयोजित कार्यशाला में विद्यार्थियों, शिक्षकों, सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। उपस्थित प्रतिभागियों ने पर्यावरण संरक्षण एवं अधिकाधिक पाेधरोपण का संकल्प लिया। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए नि hindusthansamachar.in त किया गया।

PRAYAGRAJ, SUNDAY, JUNE 07, 2026

PRAYAGRAJ 03

Environmental festival organized at Ecological Restoration Centre

Staff Reporter

Prayagraj: On the occasion of World Environment Day, the ICFRE-ERC Centre for Ecological Restoration, Prayagraj, organized the "Paryavaran Parv" workshop and a green film festival. Its objective was to raise public awareness about environmental protection, cleanliness, and a green lifestyle. The program was inaugurated by the guests lighting a lamp. Center Head Dr. Sanjay Singh welcomed the speakers and highlighted the Paryavaran Parv. The booklet, "Sustainable Solutions, Enduring Impact - A Research Retrospective of ICFRE-ERC," written by Dr. Sanjay Singh and Dr. Anubha Srivastava, based on the Center's work over 34 years, was released. In the first technical session of the workshop, Professor Kumar Birendra of Allahabad University stated that the environment in Hindi literature has been depicted through nature, forests, rivers, mountains, and living creatures. Poets and writers have conveyed the message of environmental protection and have highlighted the deep connection between humans and nature. This literature raises awareness about environmental balance, beauty, and sensitivity. Dr. Pankaj Srivastava of Allahabad University, through a video presentation, highlighted the role of forestry in environmental protection and advocated for promoting forestry. He stated that forestry programs help mitigate the effects of climate change by absorbing carbon dioxide from the air. Senior theatre artist Praveen Shekhar, referring to Indian and Western drama, explained how environmental concerns have been a central theme in many Indian plays. Playwrights and literary figures have always been aware of this concern. He also discussed Western and Indian works of art that have depicted the environment. Center Head Dr. Sanjay Singh, through a video presentation, evaluated Indian and Western cinema with an environmental focus. He discussed several feature films and documentaries from Western and Asian countries in film history, where the environment has been a central issue. Program coordinator and senior scientist Alok Yadav outlined the workshop's outline. The workshop was successfully conducted by Dr. Anubha Srivastava, senior scientist and organizing secretary of the Center. The second technical session of the workshop featured a Green Film Festival, attended by audiences from respected institutions in the city. The festival's jury included film critic Anand Kakkar, physician and environmentalist Dr. Kanchan Mishra, and actor Amar Singh. Green film clips related to environmental protection, obtained from various forestry institutions across the country, were screened. The esteemed jury members selected entries for awards based on their high quality and presentation. Students, teachers, social organizations, public representatives, and local citizens enthusiastically participated in the workshop. Participants pledged to protect the environment and plant more trees. At the end of the workshop, all participants were thanked and a call was given to continue their efforts to protect the environment.

First Green Film Festival - Lecture on environmental issues in art, literature and cinema

Mon. Jun 8th, 2026 12:37:02 PM

URNEWSBOX

UNCATEGORIZED

Environmental festival organized at Ecological Restoration Centre

By admin
JUN 7, 2026

First Green Film Festival – Lecture on environmental issues in art, literature and cinema

Prayagraj: On the occasion of World Environment Day, the ICFRE-ERC Centre for Ecological Restoration, Prayagraj, organized the "Paryavaran Parv" workshop and a green film festival. Its objective was to raise public awareness about environmental protection, cleanliness, and a green lifestyle. The program was inaugurated by the guests lighting a lamp. Center Head Dr. Sanjay Singh welcomed the speakers and highlighted the Paryavaran Parv. The booklet, "Sustainable Solutions, Enduring Impact – A Research Retrospective of ICFRE-ERC," written by Dr. Sanjay Singh and Dr. Anubha Srivastava, based on the Center's work over 34 years, was released. In the first technical session of the workshop, Professor Kumar Birendra of Allahabad University stated that the environment in Hindi literature has been depicted through nature, forests, rivers, mountains, and living creatures. Poets and writers have conveyed the message of environmental protection and have highlighted the deep connection between humans and nature. This literature raises awareness about environmental balance, beauty, and sensitivity. Dr. Pankaj Srivastava of Allahabad University, through a video presentation, highlighted the role of forestry in environmental protection and advocated for promoting forestry. He stated that forestry programs help mitigate the effects of climate change by absorbing carbon dioxide from the air. Senior theatre artist Praveen Shekhar, referring to Indian and Western drama, explained how environmental concerns have been a central theme in many Indian plays. Playwrights and literary figures have always been aware of this concern. He also discussed Western and Indian works of art that have depicted the environment. Center Head Dr. Sanjay Singh, through a video presentation, evaluated Indian and Western cinema with an environmental focus. He discussed several feature films and documentaries from Western and Asian countries in film history, where the environment has been a central issue. Program coordinator and senior scientist Alok Yadav outlined the workshop's outline. The workshop was successfully conducted by Dr. Anubha Srivastava, senior scientist and organizing secretary of the Center. The second technical session of the workshop featured a Green Film Festival, attended by audiences from respected institutions in the city. The festival's jury included film critic Anand Kakkar, physician and environmentalist Dr. Kanchan Mishra, and actor Amar Singh. Green film clips related to environmental protection, obtained from various forestry institutions across the country, were screened. The esteemed jury members selected entries for awards based on their high quality and presentation. Students, teachers, social organizations, public representatives, and local citizens enthusiastically participated in the workshop. Participants pledged to protect the environment and plant more trees. At the end of the workshop, all participants were thanked and a call was given to continue their efforts to protect the environment.

हिन्दी साहित्यने पर्यावरणका चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वतसे किया-प्रो.बीरेन्द्र कुमार

विश्व पर्यावरण दिवसपर पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्रपर हुआ व्याख्यान

पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र द्वारा पर्यावरण पर्व कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। केन्द्र प्रमुख डा.संजय सिंह तथा डा.अनुभा श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तिका का विमोचन हुआ। तकनीकी सत्र में प्रो.कुमार बीरेंद्र इविवि ने कहा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वत और जीवन जंतुओं के माध्यम से किया गया है। कवियों और लेखकों ने पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देते हुए मानव और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को दर्शाया है। इविवि के डा.पंकज श्रीवास्तव ने वीडियो प्रेजेंटेशन से पर्यावरण संरक्षण में वानिकी की भूमिका के साथ वानिकी को बढ़ावा देने की बात कही। कहा कि वानिकी कार्यक्रम वायु में कार्बन डाई आक्साइड को अवशोषित करके जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। वरिष्ठ रंगकर्मी प्रवीण शेखर ने बताया कि किस प्रकार पर्यावरण का विषय और चिंता अनेक भारतीय नाटकों का केन्द्रीय विषय रहा है। केन्द्र प्रमुख डा.संजय सिंह ने भारतीय और पश्चिमी सिनेमा पर्यावरण को केन्द्र में रखकर फिल्मो का विशेषण किया। जिन्होंने फ़िल्म इतिहास की पश्चिमी, एशियाई देशों की कई कथा फिल्मो और वृत्तचित्रों की चर्चा किया, इसमें पर्यावरण केन्द्रीय सवाल रहा है। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यशाला की रूप रेखा पर प्रकाश डाला। संचालन केन्द्र की आयोजन सचिव डा.अनुभा श्रीवास्तव ने किया। अन्य सत्र में ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। जूरी में फ़िल्म समीक्षक आनंद कक्कड़, पर्यावरणविद डा.कंचन मिश्रा, अभिनेता अमर सिंह रहे।

पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र में पर्यावरण पर्व का आयोजन

सहज शक्ति संवाददाता

प्रयागराज। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा 'पर्यावरण पर्व' कार्यशाला और ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित वक्ताओं का स्वागत करते हुए पर्यावरण पर्व पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा 34 वर्षों में किए गए कार्यों पर आधारित डॉ. संजय सिंह तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा लिखित एर्लूंहेंत एदत्ल्-ग्दहे, हेंल्हु घ्र्ङ्-ीम्ि्देजम्न द घ्ई-ें पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. कुमार बीरेंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वत और जीवन जंतुओं के माध्यम से किया गया है। कवियों और लेखकों ने पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देते हुए मानव और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को दर्शाया है। यह साहित्य पर्यावरणीय संतुलन, सौंदर्य और संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है।इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. पंकज श्रीवास्तव ने वीडियो प्रेजेंटेशन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में वानिकी की भूमिका से अवगत कराया साथ ही वानिकी को ह देने की बात कही।

कार्यक्रम समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कार्यशाला की रूप रेखा पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यशाला के दूसरे तकनीकी सत्र में ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया, जिसमें नगर के सम्मानित संस्थानों के दर्शक आदि उपस्थित रहे। फेस्टिवल की जूरी में फ़िल्म समीक्षक आनंद कक्कड़, चिकित्सक व पर्यावरणविद डॉ. कंचन मिश्रा तथा अभिनेता अमर सिंह आदि सम्मिलित रहे। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न वानिकी संस्थानों द्वारा प्राप्त पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित ग्रीन फ़िल्म क्लिप्स का प्रदर्शन किया गया।

उपस्थित प्रतिभागियों ने पर्यावरण संरक्षण एवं अधिकाधिक वृक्षारोपण का संकल्प लिया। कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया गया।

पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र में पर्यावरण पर्व का आयोजन

➔ **प्रथम ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल**

➔ **कला, साहित्य, सिनेमा में पर्यावरण के स्वर पर व्याख्यान**

प्रयागराज। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा 'पर्यावरण पर्व' कार्यशाला और ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित वक्ताओं का स्वागत करते हुए पर्यावरण पर्व पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा 34 वर्षों में किए गए कार्यों पर आधारित डॉ. संजय सिंह तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा लिखित *Sustainable Solutions, Enduring Impact-A Research Retrospective of ICFRE-ERC* पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. कुमार बीरेंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वत और जीवन जंतुओं के माध्यम से किया गया है। कवियों और लेखकों ने पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देते हुए मानव और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को दर्शाया है। यह साहित्य पर्यावरणीय संतुलन, सौंदर्य और संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है।

पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र में पर्यावरण पर्व का आयोजन

प्रथम ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल, कला, साहित्य, सिनेमा में पर्यावरण के स्वर पर व्याख्यान

लोकमित्र ब्यूरो

प्रयागराज। विश्व पर्यावरण दिवस पर भावाअशिप - पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा ÷पर्यावरण पर्व÷ कार्यशाला और ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य जनमानस में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित वक्ताओं का स्वागत करते हुए पर्यावरण पर्व पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में केन्द्र द्वारा 34 वर्षों में किए गए कार्यों पर आधारित डॉ. संजय सिंह तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. कुमार बीरेंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति, वन, नदी, पर्वत और जीवन जंतुओं के माध्यम से किया गया है। कवियों और लेखकों ने पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देते हुए मानव और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को दर्शाया है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. पंकज श्रीवास्तव ने वीडियो प्रेजेंटेशन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में वानिकी की भूमिका से अवगत कराया साथ ही वानिकी को बढ़ावा देने की बात कही।

केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने वीडियो प्रेजेंटेशन के माध्यम से भारतीय और पश्चिमी सिनेमा पर्यावरण को केन्द्र में रखकर फिल्मो का विशेषण किया।

कार्यशाला का सफल संचालन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यशाला के दूसरे तकनीकी सत्र में ग्रीन फ़िल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया, जिसमें नगर के सम्मानित संस्थानों के दर्शक आदि उपस्थित रहे।